International Journal of Information Movement Vol.3 Issue VIII (December 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 22-24

मूल्यों के विघटन और नये मूल्यों की संरचना में अर्थ और भौतिक दृष्टि की भूमिका

डॉ. ममता देवी
सहायक प्रवक्ता (हिन्दी)
माता सुन्दरी खालसा गर्ल्स कॉलेज, निसिंग (करनाल)

जीवन की विभिन्न स्थितियों के दबाव, धार्मिक, आध्यात्मिक भावना के क्षीणत्व, समाज में व्यक्ति के गुणों के स्थान पर अर्थ की प्रतिष्ठा ने व्यक्ति की जीवन दृष्टि और पद्धति को दूर तक प्रभावित कर कुछ पुराने मूल्यों का विघटन और नए मूल्यों की संरचना की है। अतः व्यक्तिवादी दृष्टि के समानान्तर ही सामाजिक स्तर पर आर्थिक मूल्य की प्रतिष्ठा हुई है। जिस तरह राजनीतिक मूल्य आज के जीवन में व्यक्ति गुणों को द्वितीय स्तर पर पहुंचा रहा है। उसी तरह अर्थ मूल्य की स्थिति मूर्धन्य है, व्यक्ति के भौतिक दुख–सुख और परिणाम स्वरूप मानवीय सम्बन्धों का वह चरम आधार है। धनाभाव के कारण बीमार पुत्र पिता को शत्रु लगता है। बेकार युवक परिवार में तिनके की तरह उपेक्षणीय हो गया है। वेतनभोगी बहन के सम्मुख बेकार युवक परिवार में अपने स्थान खो देता है। बेकार पति की घर में नौकर की स्थिति हो जाती है। दूध और दया के अभाव में परिवार ही नहीं रूग्ण शिशु भी जीवन क्षीण हो रहे हैं। शिक्षा और वैयक्तिक गुण निरर्थक सिद्ध हो रहे हैं रूपवती युवतियाँ कुरूप अधेड़ सम्पन्न व्यक्तियों से विवाह करने के लिए विवश हैं। अस्वस्थ वेश्याएँ देह व्यापार के लिए लाचार हैं।

पत्नियों के सम्मुख वेश्यावृत्ति के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है, आर्थिक स्तर के कारण हीन ग्रन्थि से पीड़ित व्यक्ति स्वयं को धनार्जन में भुलाकर समस्त मानवीय सम्बन्धों की उपेक्षा कर देता है। धनलिप्सा में अंधा व्यक्ति अपनी पत्नी को दूसरों के साथ नाचने के लिए विवश करता है। पिता पुत्री के अवैध यौन सम्बन्धों को सहता रहता है, किन्तु आय कम हो जाने के भय से उसका विवाह नहीं करता। अर्थ लिप्सा चरमावस्था पर ग्रन्थि बन जाती है और समस्त सामाजिक पारिवारिक दायित्वों को भूलकर व्यक्ति भले बुरे साधनों से धन अर्जन में जुटा रहता है, उसे कुंठाग्रस्त पुत्री की उन्माद भी विचलित नहीं करता। अर्थसंचय लिप्सा के पीछे पति अपने पत्नी की कोमल भावनाओं की उपेक्षा कर रहा है और परिणामस्वरूप पत्नी किसी भी पुरूष की बांहों के घेरे में आबद्ध होने के लिए लालायित है। अल्प आय के कारण व्यक्ति सत्ताईस वर्ष तक विवाह नहीं कर पाता। बेकार पति नौकरी करती पत्नी के विषय में परपुरूष सम्बन्ध की कल्पना करते हुए भी नौकरी छोड़ने के लिए नहीं कह पाता। इसी तरह बेकार व्यक्ति पत्नी द्वारा किए काम के पैसे निकलवाने के लिए निरन्तर दफतरों के बाबुओं का उपहास का पात्र बनता रहता है और स्वाभिमान पर आघात सहता रहता है।

इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में आर्थिक मूल्य की केन्द्रक स्थिति, उसके व्यक्तिगत को निर्धारित करती है, उसमें असमानताएं उत्पन्न करती है, मानवीय सम्बन्धों को परिवर्तित करती है सार्थक जीवन मूल्यों पर प्रश्न चिह्न अंकित करती है।

1.0 संयुक्त परिवार विघटन :

स्वांतत्र्योत्तर व्यक्ति की मानसिक्ता में परिवेश के आग्रह से आए परिवर्तन और व्यक्तिवादी प्रवृति तथा आर्थिक आवश्यकताओं से विराट स्तर पर मूल्य परिवर्तन के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ।

व्यक्ति के अति वैयक्तिक दृष्टिकोण और प्रदर्शन, आधिपत्य और व्यक्ति स्वातन्त्रय की चेतना ने भी संयुक्त परिवार विघटन में विशिष्ट भूमिका निभाई है। परिणामस्वरूप घर अन्दर ढह रहे हैं पुत्र पिता की उपस्थिति को अपनी व्यक्तित्वहीनता का कारण मान रहा है, क्योंकि जीवन के महत्वपूर्ण विवाह आदि के निर्णय पितृवर्ग द्वारा संतान पर लादे जा रहे हैं। संयुक्त परिवार पति पत्नी के स्वतन्त्र मिलन में बाधक हो रहे हैं। परिणामस्वरूप पुत्र की मानसिकता विद्रोही हो रही है और वह घर त्याग रहा है और नौकरी पर ही इच्छित विवाह की सूचना देकर पितृ वर्ग अपना कर्तव्य पूरा समझ रहा है। संयुक्त परिवार में गृह कलह और प्रत्येक का विकसित व्यक्तिवादी दृष्टिकोण परिवार की जड़ें हिला रहा है। संयुक्त परिवार में व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध रोष ही रहे हैं। दायित्वहीन युवक परिवार के प्रति विमुख हो रहे हैं। विदेशों में प्रवासी युवक परिवारजनों को उपहार भेजकर ही कर्तव्य पूरा होना समझ रहे हैं। आर्थिक विपन्नता भी संयुक्त परिवार विघटन का आधार प्रस्तुत कर रही है।

अब एक व्यक्ति के अर्जन से सम्पूर्ण परिवार का भरण–पोषण सम्भव नहीं रह गया है। रामुकार की 'धूल भरे तूफान' और कृष्ण बलदेव वैद की ''अगर मैं आज'' कहानियां इस तथ्य की साक्षी हैं तथा काशीनाथ की 'अपने घर का देश' कहानी को भी इस दृष्टि से देखा जा सकता है।

2.0 दाम्पत्य जीवन में विघटन :

संयुक्त परिवार विघटन ने दाम्पत्य विघटन की प्रवृति को भी जन्म दिया है। अतिवैयक्तिक दृष्टिकोण और परस्पर यानै असामंजस्य भी दाम्पत्य विघटन का कारण बन रहा है। कभी–कभी आर्थिक विपन्नता भी इस विघटन की भूमिका प्रस्तुत करती है। नारी–पुरूष का अहं, उनके टकराव व हीनग्रन्थि सम्बन्ध–विच्छेद तक ले जाते हैं और अब एक और जिन्दगी जीने के लिए व्यक्ति अभिशप्त हो जाता है। यौन असामंजस्य भी दाम्पत्य विघटन का कारण हो रहा है और तीसरे आदमी का प्रवेश इस विघटन को सम्पूर्ण परिणति का पहुंचा रहा है। पुरूष का अहं उसके दाम्पत्य सम्बन्धों में विघटन उपस्थित कर रहा है और स्त्री अपने व्यक्तित्व की अवहेलना से पीड़ित हो रही है। प्रेम आकर्षण की स्थिति समाप्त हो चुकी है। व्यंग्य कथनी होकर वे केवल सम्बन्धों को ढो रहे हैं। विवाह पूर्व काम सम्बन्धों की ग्रन्थि दाम्पत्य विघटन का कारण बनती है। पति–पत्नी में परस्पर बौद्धिक असामंजस्य भी दाम्पत्य को विघटन के कगार पर ला खड़ा करता है। पति की आर्थिक विपन्नता और पत्नी की आत्म–निर्भरता भी दाम्पत्य सम्बन्धों में असामान्यता का कारण बन नही है। काम सम्बन्धों में असामान्यता का कारण बन रही है।

3.0 काम सम्बन्धों में नयी नैतिकता की खोज :

विवाह पूर्व काम सम्बन्धों की स्थापना बिना पाप बोध के स्वीकार की जा रही है। विवाह रहित सहचर्यजन्य काम सम्बन्ध भी स्त्री पुरूष सम्बन्धों की नयी नैतिकता की स्थापना कर रहे है। विवाहहीन काम साहचर्य निर्मल वर्मा की कहानियों में भी व्यक्त हुआ है। निर्बाध भोग की प्रक्रिया काम मूल्यों में परिवर्तन रेखांकित कर रही है। मुक्त भोग की परिणतिया युवतियों को प्रेमियों को बुलाने के लिए विवश करती है। काम स्वच्छन्दता पर पुरूष से सम्बन्ध स्थापित करने पर भी किसी प्रकार की कुंठा नहीं जगाती। स्वच्छन्द काम सम्बन्धों की स्थिति यह है कि पत्नी अपने पति से उनकी चर्चा कर देती है और पति द्वारा कुछ कह देने पर प्रेमी से क्षमा मांगने पहुंच जाती है। जब स्त्री के लिए प्रेमी के सम्मुख अन्य काम संबंध गोपनीय नहीं है। स्त्री भी पुरूष से काम सम्बन्धों की एकनिष्ठता चाहती है, अन्यथा वह भी पर–पुरूष से सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। पर–पुरूष सम्बन्ध मात्र दाम्पत्य मूल्य की गरिमा को विघटित नहीं कर सकता, किन्तु काम सम्बन्धों की अमर्यादित और असामाजिक स्थिति व्यक्ति की विकृतियों का भी परिणाम है।

4.0 मातृत्व कामना और नारी का सम्पूर्णत्व :

आज की परिस्थितियों में आर्थिक विवशता नारी को मातृत्व ग्रहण से वंचित रखती है। परिणामस्वरूप नारी को अपने व्यक्तित्व की अपूर्णता की अनुभूति बनी रहती है शिक्षा, पद और धन की प्राप्ति के पश्चात भी मातृत्वहीनता स्त्री को अपूर्ण होने का बोधगत कारण रखती है। मातृत्व–सुख भोग, सन्यास सबसे श्रेष्ठ है। चाहे संतान कितनी भी उददण्ड एवं विपन्न हो, वह बेकार और मनमानी करने वाली ही क्यों ना हो मूल्य स्तर पर मातृत्व गृहण की नयी पहचान आज की कहानी में रेखांकित हुई है।

5.0 स्वाभिमान की मूल्यपरक अभिव्यक्ति :

आज की कहानी में व्यक्तिवादी दृष्टि स्वाभिमान के स्तर पर मूल्यान्वेषण से सम्बद्ध है। बहन को 'प्रास' कहने पर प्रोफेसर को चांटा मारना और पुरानी पीढ़ी द्वारा नए की अवज्ञा नयी पीढ़ी के स्वाभिमान को आहत कर रही है।

कहानी में रचना स्तर पर मूल्यों की वह व्यापक प्रतीति आज के कथाकार की जागरूकता तथा जीवन में पूर्ण सम्पृक्ति का परिचायक है। मूल्य संरचना की नैतिक अनैतिक दृष्टि का प्रश्न तो है, ही उन्हें पहचान कर कथा में उनकी चरितार्थता का भी प्रश्न महत्वपूर्ण है। कहना न होगा, इन प्रश्नों से आज का कथाकार जूझ रहा है, अब तक चाहे अपेक्षित सफलता उसे न भी मिली हो।

6.0 साहचर्य मूल्य :

साहचर्य के अभाव में नयी पुरानी दोनों पीढ़ियां अकेली पड़ती जा रही है और व्यक्ति के व्यक्तित्व का विघटन होता जा रहा है। साहचर्य की अलभ्यता का बोध व्यक्ति को दयनीय बना रहा है। कामकाजी महिलाएं सहचर्यहीन जीवन की पीड़ा से ग्रसित है। अकेलेपन से प्रताड़ित कथानायक खिरे हुए समूचे परिवार को निमन्त्रित करता है और उनके रहते हुए भी स्वयं को अकेला अनुभव करता है।

7.0 दायित्व विमुखता :

मूल्य स्तर पर अतिवैयक्तिकता एवं स्वार्थपरता के कारण दायित्वहीनता विकसित हो रही है। कमा बेटी का माता–पिता विवाह नहीं करना चाहते। पुत्र माता–पिता, छोटे भाई–बहिनों को बहन पर निर्भर छोड़ विदेश प्रवासी हो जाता है संतान भी मां बापों के कर्तव्य संपादन पर प्रश्न चिन्ह लगा रही है। इस तरह मूल्य विघटन का यह स्वरूप अनेक नयी मानवीय समस्याएं उत्पन्न कर रहा है।

8.0 व्यक्ति स्वातन्त्रय :

व्यक्तिवादी दृष्टि के विकसित होने से व्यक्ति निरन्तर स्वतत्रंता मूल्य के प्रति जागरूक होता जा रहा है। विवाह आदि निजी महत्वपूर्ण निर्णयों को अपने पर थोपा हुआ अनुभव कर वह आत्महत्या के मार्ग पर बढ़ जाता है। बड़े परिवार की बहू बनने पर भी स्त्री वैयक्तिक स्वतत्रंता के अपहरण पर घुटन अनुभव करती है। तो दूसरी ओर

वैयक्तिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मां–बाप को ठुकराकर नीरंजना राव के पास चली जाती है। पितृ वर्ग द्वारा निर्णय थोपे जाने पर व्यक्ति जीवन में निरूत्साहित हो जाता है और नितान्त अकेला पड़ जाता है। व्यक्ति का आन्तरिक पीढ़ी संघर्ष :

स्वातंत्र्य–बोध उसे स्वप्न में विचरण कराकर अपनी तुष्टि खोजता है।

9.0 पीढ़ी संघर्ष :

आज की कहानी में मूल्य स्तर पर नयी पुरानी पीढ़ी का परस्पर संघर्ष चल रहा है। कहीं पुरानी पीढ़ी संतान द्वारा तिरस्कृत हो रही है, तो कहीं पुरानी पीढ़ी संतान के साथ सम्बन्धों का समायोजन नहीं कर पा रही है, तो कही समायोजन के लिए स्वाभिमान की आहुति दे रही है तो कहीं नई पीढ़ी उनका मान बनाए रखने में संघर्षशील है। नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का आधिपत्य स्वीकार करने को तैयार नहीं है। वह उसे बिरादरी बाहर कर वैयक्तिक स्वतंत्रय मूल्य की रक्षा कर रही है और स्वातंत्रय का आत्यान्तिक बोध उसे पिता की हत्या की कामना से जोड़ता है तो कहीं वह पितृवर्ग के प्रति दायित्वहीन हो जाती है। व्यक्ति स्वातंत्रय का अतिवैयक्तिक बोध पिता और पत्नी द्वारा अपनी स्वतत्रंता को सीमित किया जाना समझ कर उन्हें विदा कर देता है।

कहीं अपनी उन्नति में बाधक समझकर मां को सामान की तरह कोठरी मे छिपा देता है, भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में इस स्थिति को देखा जा सकता है। पिता का परिवार की आर्थिक 'बागडोर ' सम्भालना नयी पीढ़ी को विद्रोही बनाने का कारण है। पिता–पुत्र के मित्रवत् व्यवहार को नयी पुरानी पीढ़ी के सामंजस्य के रूप में भी देखा जा रहा है, तो इसके विपरीत कहीं पिता पुत्री के रूप में परस्पर अजनबी होते जा रहे हैं।

इस तरह मूल्यों की संक्रमण स्थिति, पुराने मूल्यों का विघटन, नयी मूल्य प्रक्रिया का संचरण एवं नयी प्रतिष्ठा के लिए ललक आज की कहानी में देखने को मिलती है।

10.0 संदर्भ :

1. राजेन्द्र यादव : कहानी स्वरूप और संवेदना, पृ. 169.
2. भीष्म साहनी : पटरियां : मौका परस्त, पृ. 63.
3. पानू खोलियां : एक किरती और : मैं संकलित 'तिनका– कहानी।
4. उषा प्रियम्वदा : जिन्दगी और गुलाक के फूल, पृ. 155.
5. आमरकान्त : मौत का नगर : दोपहर का भोजन, पृ. 162.
6. कमलेश्वर : मांस का दरिया, पृ. 20.
7. राजेन्द्र यादव टूटना और अन्य कहानियां : टूटना, पृ. 136.
8. सुदर्शन चौपड़ा – जाले : माध्यमः, अगस्त 1966.
9. ज्ञानरंजन : फेंस के इधर उधर :शेष होते हुए, पृ. 55.
10. कृष्ण बल्देव वैद : दूसरे किनारे से : भूत, पृ. 23–24.
11. ममता कालिया : छुटकारा : अपत्नी, पृ. 40.
12. गिरीराज किशोर : रिश्ता तथा अन्य कहानियां : रिश्ता, पृ. 145.
13. राजेन्द्र यादव : टूटना तथा अन्य कहानियां : एक कटी हुई कहानी, पृ. 20.
14. सुधा अरोड़ा बगैर बताशे हुए : घर, पृ. 144.
15. सुरेश सिन्हा : तट से छूटे हुए : माध्यम, जून 1966.
16. आरकान्त : मौत का नगर : हत्यारे, पृ. 96.
17. मृदुला गर्ग : कितनी कैदें, पृ. 7.
18. निर्मल वर्मा : परिन्दे डझयरी का खेल, पृ. 9.
19. उषा प्रियम्वदा : जिन्दगी और गुलाब के फूल : वापसी, पृ. 143.
20. राजेन्द्र यादव : तलाश : में संकलित 'पीढ़ियां' कहानी, पृ. 170.
21. राजेन्द्र यादव : किनारे से किनारे तक बिरादरी बाहर, पृ. 120.
22. रमेश बक्षी : पिता दर पिता : में संकलित 'पिता दर पिता' कहानी, पृ. 10.
23. सुरेश सिन्हा : वतन : कल्पना : दिसम्बर 1965, पृ. 27.
24. निर्मल वर्मा : जलती झाड़ी : माया दर्पण, पृ. 22.